संरचना तथा भू आकृति विज्ञान

© ICERT not to be republished

- पृथ्वी लगभग 460 करोड़ वर्ष पुरानी है।
- इस अवधि में अंतर्जात बलों (पटल विरूपणी, ज्वालामुखी, भूकंप आदि) व बहिर्जात बलों (प्रवाहित जल, पवन, हिमानी, सागरीय तरंग, भूमिगत जल आदि) की गतिशीलता के कारण बहुत से परिवर्तन हुए।
- ये परिवर्तन भारतीय उपमहाद्वीप में भी हुए हैं जो गोंडवाना लैंड का भाग था।
- करोड़ों वर्ष पहले इंडियन प्लेट भूमध्य सागर के दक्षिण में स्थित थी। यह आकार में विशाल थी और ऑस्ट्रेलियन प्लेट इसी का हिस्सा थी।

ट्रियासी काल
20 करोड़ साल पहले

चित्र: 2.1

- करोड़ों वर्षों के दौरान यह प्लेट कई हिस्सों में टूटने के बाद ऑस्ट्रेलियन प्लेट दक्षिण की ओर तथा इंडियन प्लेट उत्तर की ओर खिसकने लगी।

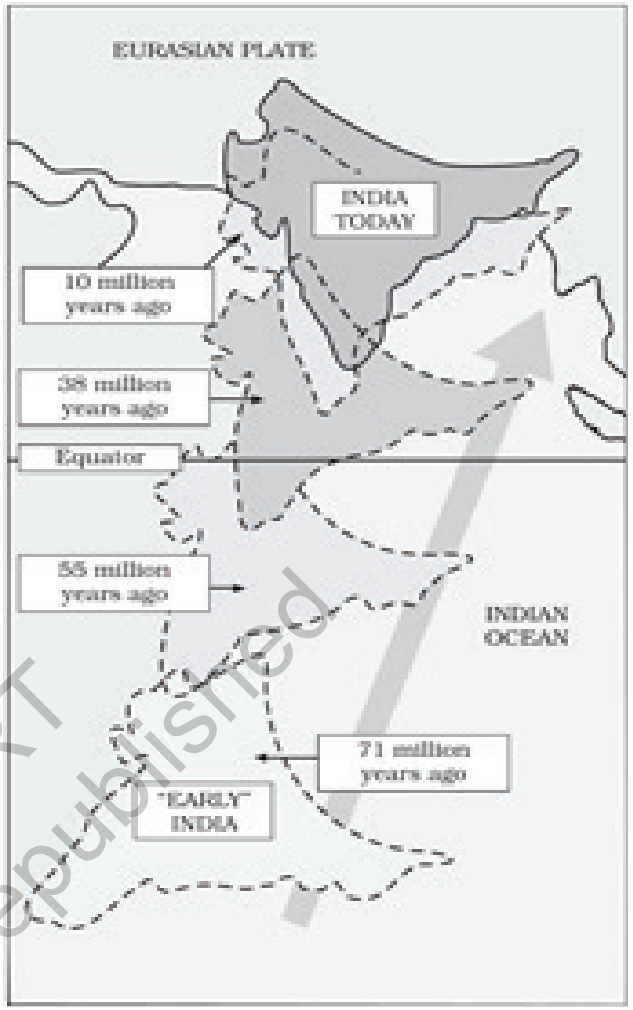

इंडियन प्लेट

चित्र: 2.2

© JCERT not to be republished

भू आकृति

मोटे तौर पर भारत को निम्नलिखित भू आकृतिक प्रदेशों में बाँटा जा सकता है।

1. उत्तर तथा उत्तरी- पूर्वी पर्वतमाला

- इसमें हिमालय पर्वत तथा उत्तरी-पूर्वी पहाड़ियाँ शामिल हैं। हिमालय में कई

समानांतर पर्वत श्रृंखलाएँ हैं जिसमें ट्रांस हिमालय, बृहद हिमालय, मध्य हिमालय और शिवालिक श्रेणियाँ शामिल हैं।

- भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग में हिमालय की ये श्रेणियाँ उत्तर पश्चिम दिशा से दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर फैली हैं।
- इसकी पूर्व-पश्चिम लंबाई लगभग 2500 किमी. तथा उत्तर से दक्षिण की चौड़ाई 160 से 400 किमी. है।

उच्चावच, पर्वत श्रेणियों के सरेखण और दूसरी भू आकृतियों के आधार पर हिमालय को निम्नलिखित उपखंडों में विभाजित किया जा सकता है।

(i) कश्मीर या उत्तरी पश्चिमी हिमालय

- इसमें काराकोरम, लद्दाख, जास्कर और पीरपंजाल जैसी अनेक पर्वत श्रेणियाँ शामिल हैं ।
- यहाँ भारत का सबसे ठंडा स्थान द्रास स्थित है।
- बृहद हिमालय और पीरपंजाल के बीच विश्व प्रसिद्ध कश्मीर घाटी और डल झील स्थित है।
- कश्मीर हिमालय करेवा के लिए भी प्रसिद्ध है, जहाँ जाफरान की खेती की जाती है।
- बृहद हिमालय में जोजीला, पीरपंजाल में बनिहाल, जास्कर श्रेणी में फोटुला और लद्दाख में खरदुंगला जैसे महत्वपूर्ण दर्रे स्थित हैं।
- यहाँ मीठे पानी की डल और वुलर झीलें तथा खारे पानी की पाँगाँग सो और सोमुरीरी झीलें स्थित हैं।
- सिंधु तथा इसकी सहायक नदियाँ, झेलम और चेनाब इस क्षेत्र को अपवाहित करती हैं।
- जम्मू और कश्मीर की राजधानी श्रीनगर झेलम नदी के किनारे स्थित है।

(ii) हिमाचल और उत्तराखंड हिमालय

- हिमालय का यह हिस्सा पश्चिम में रावी नदी और पूर्व में काली नदी के बीच स्थित है। इस प्रदेश में बहने वाली नदियाँ रावी, व्यास, सतलुज, गंगा, यमुना और घाघरा है।
- हिमालय की तीनों मुख्य पर्वत श्रृंखलाएँ बृहद हिमालय, लघु हिमालय, शिवालिक श्रेणी इस हिमालय खंड में स्थित है।
- लघु हिमालय में 1000 से 2000 मीटर ऊँचाई वाले महत्वपूर्ण पर्वतीय नगरों में धर्मशाला, मसूरी, कसौली, अल्मोड़ा, लैंसडाउन और रानीखेत हैं। प्रसिद्ध फूलों की घाटी भी इसी पर्वतीय क्षेत्र में स्थित है।
- गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ और हेमकुंड साहिब भी इसी इलाके में स्थित हैं।
- बृहद हिमालय की घाटियों में भोटिया प्रजाति के खानाबदोश लोग रहते हैं।
- प्रसिद्ध फूलों की घाटी भी इसी पर्वतीय क्षेत्र में स्थित है

© NCERT not to be republished

(iii) दार्जिलिंग और सिक्किम हिमालय

- यह हिमालय का छोटा किन्तु महत्वपूर्ण भाग है। इसके पश्चिम में नेपाल हिमालय और भूटान हिमालय है।
- यहाँ तेज बहाव वाली तिस्ता नदी बहती है और कंचनजुंगा जैसी ऊँची चोटियाँ और घाटियाँ पायी जाती है।

(iv) अरुणाचल हिमालय

- यह पर्वतीय क्षेत्र भूटान हिमालय से लेकर पूर्व में डिफू दर्रे तक फैला है।
- इस क्षेत्र की मुख्य चोटियों में कांगतु और नामचा बरवा शामिल है।
- इस क्षेत्र में पश्चिम से पूर्व में बसी कुछ जनजातियाँ इस प्रकार हैं- मोनपा, अबोर, मिशमी, निशी और नागा।
- यहाँ की जनजातियाँ झूम खेती करती हैं, जिसे स्थानांतरी कृषि या स्लैश और बर्न कृषि भी कहा जाता है।

(v) पूर्वी पहाड़ियाँ और पर्वत

- हिमालय पर्वत के इस भाग में पहाड़ियों की दिशा उत्तर से दक्षिण है।
- उत्तर में यह पटकोई बूम, नागा पहाड़ियाँ, मणिपुर पहाड़ियाँ और दक्षिण में मिजो या लुशाई पहाड़ियों के नाम से जानी जाती है।
- यहाँ अनेक जनजातियाँ झूम या स्थानांतरी खेती करती हैं।
- बराक, मणिपुर और मिजोरम की मुख्य नदी है।
- मणिपुर घाटी के मध्य एक झील स्थित है जिसे 'लोकताक झील' कहा जाता है।
- यह क्षेत्र जैव विविधता में धनी है

2. उत्तरी भारत का मैदान

- उत्तरी भारत का मैदान सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा बहा कर लाए गए जलोढ़ निक्षेप से बना है।
- जलोढ़ निक्षेप की अधिकतम गहराई 1000 से 2000 मीटर है
- इस मैदान की पूर्व से पश्चिम लंबाई लगभग 3200 किलोमीटर है।
- इसकी औसत चौड़ाई 150 से 300 किलोमीटर है।

उत्तर से दक्षिण दिशा में इस मैदान को भाबर, तराई और जलोढ़ मैदान में बाँट सकते हैं।

3. भाबर प्रदेश

- शिवालिक हिमालय से 12 किलोमीटर तक के क्षेत्र, जिसमें कंकड़ पत्थर अधिक होते हैं, को भाबर प्रदेश कहा जाता है।

4. तराई प्रदेश

- भाबर के दक्षिण में 10 से 20 किमी. चौड़ाई का दलदली क्षेत्र मिलता है, जिसे तराई क्षेत्र कहा जाता है।

© JCERT not to be republished

5. जलोढ़ मैदान

- तराई के दक्षिण में विस्तृत मैदानी भाग को जलोढ़ मैदान कहा जाता है। इसमें पुराने जलोढ़ों से निर्मित तथा अपेक्षाकृत ऊँची भूमि जहाँ बाढ़ का पानी नहीं पहुँच पाता है, 'बांगर' कहलाता है, जबकि नवीन जलोढ़ों से निर्मित बाढ़ के मैदान की निम्न भूमि का भाग 'खादर' कहलाता है।

6. प्रायद्वीपीय पठार

- प्रायद्वीप का शाब्दिक अर्थ होता है, भूमि का वह भाग जो तीन ओर से जल से घिरी हुई हो।
- भारतीय प्रायद्वीप पश्चिम में अरब सागर, पूर्व में बंगाल की खाड़ी तथा दक्षिण में हिंद महासागर से घिरा हुआ है।
- यह भारत का सबसे प्राचीन और स्थिर भूखंड है।
- इस क्षेत्र की मुख्य स्थलाकृतियों में टॉर, ब्लॉक पर्वत, भ्रंश घाटियाँ, पर्वत स्कंध, नग्न चट्टान संरचना, टेकरी पहाड़ी शृंखलाएँ तथा क्वार्टजाइट भित्तियाँ शामिल हैं जो प्राकृतिक जल संग्रह के स्थल हैं।
- प्रायद्वीपीय पठार का निर्धारण उत्तर पश्चिम में दिल्ली कटक (अरावली विस्तार) पूर्व में राजमहल पहाड़ियाँ, पश्चिम में गिर पहाड़ियाँ और दक्षिण में इलायची की पहाड़ियाँ प्रायद्वीपीय पठार की सीमाएँ निर्धारित करती हैं।
- उत्तर-पूर्व में शिलांग तथा कार्बी-आंगलोंग पठार भी इसी भूखंड का विस्तार हैं।
- प्रायद्वीपीय पठार अनेक पठारों और से मिलकर बना है जैसे हजारीबाग पठार, पलामू पठार, राँची पठार, मालवा पठार, कोयंबटूर पठार, कर्नाटक पठार तथा बुंदेलखंड पठार।
- बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली प्रायद्वीपीय नदियों में महानदी, गोदावरी, कृष्णा, पेन्नार, कावेरी और पश्चिम में अरब सागर में गिरने वाली नदियों में नर्मदा एवं ताप्ती प्रमुख हैं।

7. उच्चावच लक्षणों के आधार पर प्रायद्वीपीय पठार को तीन भागों में बाँटा जा सकता है

8. दक्कन का पठार

- इस पठार का आकार त्रिभुजाकार है।
- इसकी औसत ऊँचाई 600 मीटर है।
- यह भारत का विशालतम पठार है तथा दक्षिण भारत के 8 राज्यों में फैला हुआ है।
- सतपुड़ा और विंध्याचल पहाड़ी शृंखला इसकी उत्तरी सीमा तथा पूर्व और पश्चिम में पूर्वी तथा पश्चिमी घाट स्थित है।
- पश्चिमी घाट को स्थानीय तौर पर अनेक नामों से जाना जाता है, जैसे महाराष्ट्र में सहयाद्री, कर्नाटक और तमिलनाडु में नीलगिरी, केरल में अन्नामलाई और इलायची पहाड़ियाँ।

© JCERT not to be republished

- प्रायद्वीपीय पठार की सबसे ऊँची चोटी अनाईमुडी (2695 मीटर) है, जो पश्चिमी घाट की अन्नामलाई पहाड़ियों में स्थित है। दूसरी सबसे ऊँची चोटी डोडाबेटा (2633 मीटर) जो नीलगिरी की पहाड़ी पर स्थित है।
- यहाँ की मुख्य श्रेणियाँ जवादी पहाड़ियाँ, बालकोंडा श्रेणी, नल्ला मल्ला पहाड़ियाँ और महेंद्र गिरी पहाड़ियाँ हैं।
- पूर्वी और पश्चिमी घाट नीलगिरी पहाड़ियों में आपस में मिलते हैं।

9. मध्य उच्च भूभाग

- नर्मदा नदी के उत्तर में प्रायद्वीपीय पठार का वह भाग जो मालवा के पठार के अधिकतर भागों पर फैला है मध्य उच्च भूभाग के नाम से जाना जाता है।
- मध्य उच्च भूभाग का पूर्वी विस्तार राजमहल की पहाड़ियों तक है जिसके दक्षिण में स्थित छोटा नागपुर पठार खनिज पदार्थों का भंडार है।
- इसका निर्माण ग्रेनाइट से होने के कारण यह काली मिट्टी से ढका हुआ है, इसे लावा निर्मित पठार भी कहा जाता है।
- यहाँ प्रवाहित होने वाली नदियों में चंबल, सिंध, बेतवा तथा केन हैं।
- समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 700 से 1000 मीटर के बीच है।

10. उत्तर-पूर्व पठार

- यह प्रायद्वीपीय पठार का ही एक विस्तारित भाग है।
- इंडियन प्लेट के उत्तर पूर्व दिशा में खिसकने के कारण राजमहल पहाड़ियों और मेघालय के पठार के बीच भ्रंश घाटी बनने से यह अलग हो गया।
- आज मेघालय और कार्बी आंगलोंग पठार इसी कारण मुख्य प्रायद्वीपीय पठार से अलग-थलग है।
- यहाँ निवास करने वाली जनजातियों के नाम के आधार पर मेघालय के पठार को तीन भागों में बांटा गया है— गारो पहाड़ियाँ, खासी पहाड़ियाँ, जयंतिया पहाड़ियाँ।
- छोटा नागपुर पठार की तरह मेघालय के पठार में भी कोयला, लोहा, सिलिमेनाइट चूने के पत्थर और यूरेनियम जैसे खनिज पदार्थों का भंडार है।

11. भारतीय मरुस्थल

- विशाल भारतीय मरुस्थल अरावली पहाड़ियों से उत्तर-पूर्व में स्थित है।
- यहाँ पर वार्षिक वर्षा 150 मिलीमीटर से कम होती है जिसके परिणामस्वरुप यह एक शुष्क और वनस्पति रहित क्षेत्र है इन्हीं स्थलाकृतिक गुणों के कारण इसे 'मरुस्थली' के नाम से जाना जाता है।

© JCERT not to be republished

- यहाँ की अधिकतर नदियाँ अल्पकालिक हैं। मरुस्थल के दक्षिणी भाग में बहने वाली लूनी इस क्षेत्र की सबसे बड़ी एवं महत्वपूर्ण नदी है। थोड़ी दूरी तय करने के बाद ही यह नदी मरुस्थल में लुप्त हो जाती है।
- यह एक अंत: स्थलीय अपवाह का उदाहरण है।

12. तटीय मैदान

स्थिति और सक्रिय भू आकृति प्रक्रियाओं के आधार पर तटीय मैदानों को दो भागों में बाँटा जा सकता है—

13. पश्चिमी तटीय मैदान

- पश्चिमी तटीय मैदान पश्चिमी घाट तथा अरब सागर के मध्य स्थित एक संकीर्ण मैदान है जो उत्तर में कच्छ के तट से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक औसतन 65 किलोमीटर की चौड़ाई में विस्तृत है।
- पश्चिमी तटीय मैदान जलमग्न तटीय मैदानों के उदाहरण हैं। जलमग्न होने के कारण पश्चिमी तटीय मैदान पत्तनों एवं बंदरगाहों के विकास के लिए प्राकृतिक परिस्थितियाँ प्रदान करता है।
- गुजरात से गोवा तक के तट को कोंकण तट, गोवा से मंगलोर तक के तट को कन्नड़ तट एवं मंगलोर से कन्याकुमारी तक के तट को मालाबार तट कहा जाता है।
- नदियों में अधिक गति होने के कारण नदियाँ डेल्टा नहीं बना पाती है।
- पश्चिमी तट पर कुछ पश्चजल (Back water) पाए जाते हैं, जिन्हें केरल में कयाल (एक प्रकार का लैगून) कहते हैं जैसे अष्टमुड़ी तथा बेम्बानाड़।

14. पूर्वी तटीय मैदान

- पूर्वी घाट एवं पूर्वी तट के बीच यह मैदान स्थित है, जो ओडिशा एवं पश्चिम बंगाल की सीमा पर स्थित स्वर्णरेखा नदी से कन्याकुमारी तक औसतन 120 किलोमीटर की चौड़ाई में विस्तृत है।
- पूर्वी तट के प्रमुख पत्तनों में कोलकाता, हल्दिया, पारादीप, विशाखापट्टनम, एन्नोर, चेन्नई एवं तूतीकोरिन हैं।
- यहाँ विश्व के बृहद डेल्टा क्षेत्र स्थित हैं, इन डेल्टाओं का निर्माण गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेपण से हुआ है, इसी मैदान में भारत की सबसे बड़ी लैगून झील चिल्का और पुलीकट स्थित हैं।
- पूर्वी तटीय मैदान के उत्तरी भाग को उत्तरी सरकार, मध्य भाग को गोलकुंडा तट तथा दक्षिणी भाग को कोरोमण्डल तट के नाम से जाना जाता है।

15. द्वीप समूह

- भारत के पास छोटे-छोटे द्वीपों को मिलाकर कुल 1208 द्वीप हैं।

© NCERT not to be republished

- द्वीप स्थलखंड के ऐसे भाग होते हैं, जिनके चारों ओर जल का विस्तार पाया जाता है। ये द्वीप समुद्र में जलमग्न पर्वतों के शिखर हैं।

16. बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीप समूह

- बंगाल की खाड़ी में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह स्थित हैं।
- बंगाल की खाड़ी के द्वीप समूह में लगभग 572 द्वीप है इनमें से 36 द्वीपों पर आबादी पाई जाती है।
- ये द्वीप समूह 6°45 से 14° उत्तरी अक्षांश और 92° से 94° पूर्वी देशांतर की मध्य स्थित हैं।
- रीची द्वीप समूह और लावरीन्थ यहाँ के दो प्रमुख द्वीप समूह है।

17. अंडमान द्वीप समूह

- उत्तर अंडमान अंडमान निकोबार द्वीप समूह का सबसे उच्चतम बिंदु सैंडल पीक यहीं पर है, जिसकी ऊँचाई 732 मीटर है।
- इस द्वीप के पूर्व में नारकोंडम द्वीप स्थित है।
- मध्य अंडमान सबसे बड़ा द्वीप है।
- इस द्वीप के पूर्व में बैरन द्वीप भारत का ही नहीं वरन् दक्षिण एशिया का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी स्थित है।
- दक्षिणी अंडमान अंडमान निकोबार द्वीप की राजधानी पोर्ट ब्लेयर यहीं पर स्थित है।
- लिटिल अंडमान दक्षिणी अंडमान तथा लिटिल अंडमान के बीच के भाग को डंकन पास कहा जाता है।

18. निकोबार द्वीप समूह

- अंडमान और निकोबार दीप समूह को 10° चैनल जलमार्ग द्वारा अलग किया जाता है।
- निकोबार द्वीप समूह तीन भागों में बटा है — कार निकोबार, लिटिल निकोबार, ग्रेट निकोबार।
- भारत का दक्षिणी बिंदु ग्रेट निकोबार में स्थित है, इसे इंदिरा पॉइंट या पिक मिलियन पॉइंट के नाम से जाना जाता है।

19. अरब सागर में स्थित द्वीप

20. लक्षद्वीप समूह

- अरब सागर के द्वीपों में लक्षद्वीप और मिनिकॉय द्वीप समूह शामिल हैं।
- सम्पूर्ण द्वीप समूह प्रवाल निक्षेप से बना है। लक्षद्वीप 9° चैनल द्वारा मिनिकॉय से तथा मिनिकाय 8° चैनल द्वारा मालदीव से अलग होता है।
- अरब सागर के द्वीप छोटे—छोटे होने के कारण अधिकतर आवास योग्य नहीं हैं।

© JCERT not to be republished

- अरब सागर के द्वीपों में कोई ज्वालामुखी नहीं मिलता है।
- यह द्वीप 8° से 12° उत्तरी अक्षांश और 71° से 74° पूर्वी देशांतर के मध्य 32 वर्ग किलोमीटर के छोटे से क्षेत्र में फैला है।
- कवरत्ती लक्षद्वीप की राजधानी तथा प्रशासनिक मुख्यालय है।
- लक्षद्वीप के उत्तरी द्वीप समूह को अमीनदीवी और दक्षिणी द्वीप समूह को मिनीकाय कहते हैं।
- लक्षद्वीप समूह 11° चैनल उत्तर में अमीनदीवी और दक्षिण में कन्नानूर द्वीप द्वारा दो भागों में विभाजित होता है।

21. अन्य महत्वपूर्ण द्वीप

- न्यू मूर द्वीप एवं गंगासागर द्वीप बंगाल की खाड़ी में हुगली नदी के तट के पास है।
- ओडिशा के तट पर व्हीलर द्वीप या अब्दुल कलाम द्वीप है जो ब्राह्मणी नदी के मुहाने पर स्थित है, यहाँ से मिसाइल का परीक्षण किया जाता है।
- आंध्रप्रदेश के तट पर श्रीहरिकोटा द्वीप है यहाँ पर सतीश धवन स्पेस रिसर्च सेंटर स्थित है।
- पंबन द्वीप या रामेश्वरम द्वीप तमिलनाडु के तट पर स्थित है रामेश्वर मंदिर यहीं पर है।
- पंबन द्वीप के सबसे दक्षिणी भाग को धनुष्कोड़ी कहा जाता है इसके बाद रामसेतु शुरू हो जाता है
- श्रीलंका एवं भारत के बीच में मन्नार की खाड़ी है।
- गुजरात एवं नर्मदा नदी के मुहाने पर खंभात की खाड़ी में आलिया बेट द्वीप है एलीफेंटा की गुफाएं इसी में स्थित है।

© JCERT not to be republished

स्मरणीय तथ्य

भारतीय उपमहाद्वीप में स्थित देशों के नाम भारत, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान और बांग्लादेश हैं।

कश्मीर घाटी का निर्माण प्लीस टोसीन काल में हुआ।

पूर्वी घाट की सबसे ऊँची चोटी महेंद्र गिरी (1501 मीटर) है।

कश्मीर घाटी में झेलम नदी युवा अवस्था में प्रवाहित होती हुई विसर्पों का निर्माण करती है।

शिवालिक शब्द की उत्पत्ति देहरादून के नजदीक शिवावाला में पाए जाने वाले भूगर्भिक रचनाओं से हुई है।

अभ्यास

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर का चयन करें।

(i) करेवा भू आकृति कहाँ पाई जाती है?

(क) उत्तरी-पूर्वी हिमालय (ख) पूर्वी हिमालय

(ग) हिमाचल-उत्तराखण्ड हिमालय (घ) कश्मीर हिमालय

उत्तर: (घ) कश्मीर हिमालय

(ii) निम्नलिखित में से किस राज्य में 'लोकताक' झील स्थित है

(क) केरल (ख) मणिपुर

(ग) उत्तराखण्ड (घ) राजस्थान

उत्तर: (ख) मणिपुर

(iii) अंडमान और निकोबार को कौन-सा जल क्षेत्र अलग करता है?

(क) 11 चैनल (ख) 10 चैनल

(ग) मन्नार की खाड़ी (घ) अंडमान सागर

उत्तर: (ख) 10 चैनल

(iv) डोडाबेटा चोटी निम्नलिखित में से कौन-सी पहाड़ी श्रृंखला में स्थित है?

(क) नीलगिरि (ख) कार्डामम

(ग) अनामलाई (घ) नल्लामाला

उत्तर: (ग) अनामलाई

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30 शब्दों में दीजिए:

(i) यदि एक व्यक्ति को लक्षद्वीप जाना हो तो वह कौन-से तटीय मैदान से होकर जाएगा और क्यों?

उत्तर: वह केरल के तटीय मैदान से होकर जाएगा क्योंकि लक्ष्यद्वीप केरल तट से 280 किलोमीटर दूर अरब सागर में स्थित है।

© JCERT not to be republished

(ii) भारत में ठंडा मरुस्थल कहाँ स्थित है? इस क्षेत्र की मुख्य श्रेणियों के नाम बताएँ।

उत्तर: भारत में ठंडा मरुस्थल कश्मीर हिमालय के उत्तर पूर्वी क्षेत्र लेह-लद्दाख में स्थित है। यह ठंडा मरुस्थल बृहत हिमालय और कराकोरम श्रेणियों के बीच स्थित है। इस क्षेत्र की प्रमुख श्रेणियां काराकोरम, लद्दाख, जास्कर और पीरपंजाल हैं।

(iii) पश्चिमी तटीय मैदान पर कोई डेल्टा क्यों नहीं है?

उत्तर: पश्चिमी तटीय मैदान अरब सागर के तट पर फैला एक संकरा मैदान है। इसके पूर्व में पश्चिमी घाट की पहाड़ियां हैं जिनसे अनेक छोटी-छोटी और तीव्रगामी नदियां निकलती है। छोटा मार्ग और कठोर चट्टान होने के कारण ये नदियां अधिक तलछाट नहीं लाती। अवसाद का प्रयाप्त निक्षेप न होने के कारण यहां कोई डेल्टा नहीं बन पाता है।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 125 शब्दों में दीजिए:

(i) अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में स्थित द्वीप समूहों का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत करें।

उत्तर: अरब सागर तथा बंगाल की खाड़ी के द्वीप समूहों की तुलना।

अरब सागर के द्वीप

(i) अरब सागर के द्वीप बंगाल की खाड़ी के द्वीपों से छोटे हैं तथा आवास योग्य नहीं हैं।

(ii) अरब सागर के सभी द्वीप मूँगे की चट्टानों से निर्मित हैं।

(iii) अरब सागर के द्वीपों में कोई ज्वालामुखी नहीं मिलता।

(iv) यह द्वीप अरब सागर में 8° उत्तर से 12° उत्तर तथा 71° पूर्व से 74° के मध्य में बिखरे मिलते हैं।

(v) अरब सागर के द्वीपों में लक्षद्वीप तथा मिनिकॉय सम्मिलित हैं।

बंगाल की खाड़ी के द्वीप

(i) बंगाल की खाड़ी के द्वीप अपेक्षाकृत बहुत बड़े तथा आवास योग्य हैं।

(ii) अरब सागर के द्वीपों के विपरीत बंगाल की खाड़ी के अधिकांश द्वीप सागरीय जल से बाहर निकली पर्वतीय चोटियों के भू-भाग हैं।

(iii) बंगाल की खाड़ी में स्थित बैरन द्वीप एक जीवंत ज्वालामुखी है जबकि नारकोडम

© JOERT not to be republished

द्वीप निर्वासित ज्वालामुखी है।

(iv) यह द्वीप बंगाल की खाड़ी में 6° उत्तर से 14° उत्तर तथा 92° पूर्व से 94° पूर्व के मध्य में बिखरे हैं।

(v) बंगाल की खाड़ी के द्वीपों में अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह सम्मिलित हैं।

(ii) नदी घाटी मैदान में पाए जाने वाली महत्त्वपूर्ण स्थलाकृतियाँ कौन-सी है? इनका विवरण दें।

उत्तर: उत्तरी भारत के मैदान का अवलोकन करें।

(iii) यदि आप बद्रीनाथ से सुंदर वन डेल्टा तक गंगा नदी के साथ-साथ चलते हैं तो आपके रास्ते में कौन-सी मुख्य स्थलाकृतियाँ आएँगी?

उत्तर: गंगा हिमालय पर्वत में गोमुख हिमनद से निकलती है। इस स्थान पर इसे गंगोत्री कहते हैं। यह 290 किमी. पर्वतीय प्रदेश से निकल कर हरिद्वार के निकट मैदानी भाग में प्रवेश करती है। इलाहाबाद के निकट यमुना जहां गंगा नदी आकर मिलती है। वह स्थान संगम के नाम से प्रसिद्ध है। समुद्र में गिरने से पहले ये एक डेल्टा का निर्माण करती है। गंगा का डेल्टा सुन्दरवन विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा है। उद्गम से लेकर डेल्टा तक इसकी लम्बाई 2525 किमी. है। इस नदी के किनारे पर हरिद्वार, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, पटना, कोलकाता आदि महत्वपूर्ण नगर बसे हैं।

© JCERT not to be republished